NPSSFW का छोटे मछुआरों से आह्वान

विश्व मत्स्योद्योग दिवस मनाएं

आशा, संकल्प और उत्साह के साथ

21 नवंबर 1997 को 32 देशों के छोटे मछुआरों और मछली श्रमिकों के प्रतिनिधि दिल्ली में इकट्ठा हुए और छोटे मछुआरों के दो दिग्गज नेता फादर थॉमस कोचेरी और हरेकृष्ण देबनाथ के नेतृत्व में पहली बार एक अंतरराष्ट्रीय मछुआरा संगठन बनाया और वैश्विक स्तर पर मछली पकड़ने की पर्यावरण के अनुकूल नीतियों, तौर-तरीक़े और सामाजिक न्याय के लिए संकल्प लिया। तब से 21 नवंबर को विश्व मत्स्योद्योग दिवस के रूप में मनाया जाता है।

में विश्व मत्स्य दिवस पर दुनिया भर के छोटे मछुआरे, मछली किसान, मछली विक्रेता और सहायक मछली श्रमिक प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, आख़िर, यह प्रकृति ही है जिसने उन्हें आजीविका उपलब्ध करवाई है। इस दिन वे अपनी आजीविका की और उसके आधार रूप प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने के अपने संकल्प के प्रति पुनः समर्पित होते हैं। विश्व मत्स्योद्योग दिवस पानी, मछली और मछुआरों की रक्षा करने के हमारे पुरोगामियों के संघर्ष और अदम्य साहस को भी याद करने का दिवस है, दुनियाभर के मछुआरा समुदाय के लिए पारंपरिक संस्कृति और जीवन शैली तथा अपनी विविधता में एकता की घोषणा करने का उत्सव है।

मत्स्योद्योग में क़रीब 25 करोड़ लोग काम करते हैं, जिसमें लगभग 50 प्रतिशत तो महिलाएं हैं। इस तरह यह दुनिया में 82 करोड़ लोगों के जीवनयापन का ज़रिया है। मत्स्योद्योग क्षेत्र 17 करोड़ 90 लाख मीट्रिक टन मछली का उत्पादन करता है। 3 अरब 20 करोड़ लोग मछली द्वारा अपना 20 प्रतिशत प्राणीज प्रोटीन प्राप्त करते हैं।

मत्स्योद्योग क्षेत्र खाद्य सुरक्षा, पोषण की स्थिति, आर्थिक वृद्धि और ग़रीबी उन्मूलन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन समूचे मत्स्योद्योग क्षेत्र, और विशेष रूप से छोटे मछुआरों के क्षेत्र के सामने जो चुनौतियाँ हैं वे इन लाभों पर हावी हो रही है।

इस वर्ष विश्व मत्स्योद्योग दिवस कोविड-19 की अभूतपूर्व महामारी के बीच आ रहा है, जब रोज़ीरोटी कमाने के तरीक़े चूरचूर हो गये है, बाज़ार ने दम तोड़ दिया है, मछुआरों को अपनी जगह या तो छोड़नी पड़ रही है, या छुड़वाई जा रही है। एकजुट हो कर विरोध करने के आम तरीक़े लागू करना आज बहुत

मुश्क़िल हो गया है। बड़ी कारोबारी कंपनियाँ अपने मुनाफ़े को बचाने के लिए मनमानी करती हैं, जिससे स्थिति ओर कठिन बन गई है। यांत्रिक क्षेत्र बेकाबू बनकर प्राकृतिक संसाधनों को लूट रहा है; बड़े और औद्योगिक फिश फार्म छोटे मछली किसानों को हाशिये पर धकेल रहे हैं; छोटे मछली विक्रेता को बाहर कर के कई मॉल और इलैक्ट्रोनिक कंपनियों ने व्यापार पर क़ब्ज़ा जमा लिया है। विकास के नाम पर अतिक्रमण और प्रदूषण छोटे पैमाने के मत्स्योद्योग को रौंद रहे हैं। सरकार भी बड़ी कंपनियों के साथ सांठगांठ करके उन्हीं के भरोसे चल रही है। इस तरह स्वयं सरकार ही प्राकृतिक संसाधनों के विनाश और श्रमिक के जीवन और आजीविका की बर्बादी में अहम भूमिका निभा रही है।

इसके बावजूद केवल छोटा मत्स्योद्योग क्षेत्र ही पर्यावरण के अनुकूल मछली स्रोतों को बरक़रार रख सकता है। ये छोटे मछुआरे ही हैं जो हमारे जल स्रोतों का मोटे तौर पर सब से ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं, लेकिन पानी का ख़र्च नहीं करते। वे ही हमारे जल स्रोतों के कुदरती संरक्षक हैं। क्योंकि, अच्छी मछली के लिए चाहिए अच्छा पानी।

इस परिस्थिति में **नैशनल प्लैटफॉर्म फॉर स्मॉल स्केल फिश वर्कर्स (NPSSFW)** मछुआरा समुदाय को विश्व मत्स्योद्योग दिवस आशा, संकल्प और उत्साह के साथ मनाने का आह्वान करता है।

छोटे मछली श्रमिक एक हो

हमारी ज़मीन, पानी और मछली स्रोतों पर हो रहे अतिक्रमण का मुकाबला करो

प्रदूषण, अत्यधिक तथा विनाशकारी मच्छीमारी का विरोध करो

पानी बचाओ, मछली बचाओ, मछुआरों को बचाओ